सूर्य की अगवानी का पर्व : मकर-संक्रान्ति

देवर्षि कलानाथ शास्त्री
पीठाचार्य-भाषामीमांसा एवं शास्त्र शोधपीठ
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

प्रतिवर्ष जाड़ों में मकर संक्रान्ति का पर्व आता है जो ग्रेगोरियन कलेंडर के हिसाब से 14 जनवरी को पड़ता है। इस दिन लाखों श्रद्धालु तीर्थ स्नान करेंगे, तिलो का कंबलों का तथा अन्य धर्म विहित वस्तुओं का दान करेंगे। सारा दक्षिण भारत 'पोंगल' पर्व मनाएगा, खिचड़ी का सेवन और गृहों का अलंकरण किया जाएगा, धार्मिक कृत्य किये जाएंगे। वहाँ तो यही वर्ष का प्रमुख त्योहार है। इसकी इस प्रमुखता के कारण क्या है? यह तो हम सभी जानते हैं कि इस दिन सूर्य धनु राशि से मकर राशि में संक्रमण करता है अतः यह संक्रान्ति कही जाती है। पर बारह राशियाँ है और प्रति मास सूर्य एक राशि से दूसरी में संक्रमण करता है। फिर केवल एक मकर संक्रान्ति को ही यह शिखर महत्व क्यों? यह जिज्ञासा स्वाभाविक है। इसका उत्तर उतना आसान नहीं है पर बहुत महत्व का है।

वस्तुतः यह उत्सव बहुत पुराना है और सूर्य के उपासकों के देश में सीधा सूर्य की उपासना से जुड़ा एक यही पर्व बचा रह गया है क्योकि उत्तर भारत में होली, दीवाली, दशहरा आदि अनेक ऐसे उत्सव अधिक महत्व के हो गये हैं जो मौसम से भले ही जुड़े हों सूर्य की उपासना से नहीं। पंजाब में लोहड़ी, असम में बिहू आदि कुछ क्षेत्रीय त्यौहार ही सूर्य से जुड़े रह गए हैं। यह उत्सव इस बात का प्रतीक भी है कि इस देश में पर्व पूर्णतः वैज्ञानिक आधार पर निर्धारित होते थे। यह पर्व सीधे खगोल विज्ञान से जुड़ा है जो मानव का सर्वाधिक प्राचीन और आदिम विज्ञान है।

सूर्य वैसे आकाश में तो बारह राशियों में भ्रमण करता है जिसे अधिक तकनीकी भाषा में कहें तो समझ सकते हैं कि पृथ्वी के परिभ्रमण के कारण वर्ष में बारह राशियों पर सूर्य पूरा चक्कर लगाता-सा दिखता है हमें, पर पृथ्वी वालों के लिए उसका क्रान्तिवृत्त कर्क राशि की रेखा से मकर राशि की रेखा तक रहता है। कर्क रेखा को अंग्रेजी में ट्रॉपिक ऑफ कैसर कहा जाता है और मकर रेखा पथ्वी के ठीक बीच में है और सूर्य इसके दोनों और 24 अक्षांशों तक (इन रेखाओं तक) आता जाता दिखता है। दूसरे शब्दों में पृथ्वी जब सूर्य के चारों ओर घूमती है तो वर्षभर उसका यही मध्यभाग जो कर्क रेखा से मकर रेखा तक है सूर्य की सीध में रहता है। इन दोनों के बीच बाले देश ट्रॉपिकल याने क्रान्तिवृत्तीय या उष्ण कटिबन्धीय कहलाते हैं।

सूर्य और पृथ्वी के परिभ्रमण का तथा यह क्रान्तिवृत्त का यह विज्ञान हजारों वर्षों से, वेदकाल से ही हमें ज्ञात था। वेदों में विभिन्न छन्दों का नाम देते हुए भूमध्य रेखा को बृहती कहा गया है, कर्क रेखा को जगती और मकर रेखा को गायत्री।

सूर्य इनके बीच में तपता है। कर्क राशि (कर्क रेखा) पर पहुँचते ही दिन छोटे हो जाते है, सर्दी पड़ती है। भूमध्य रेखा पर सूर्य होता है तो रात-दिन बराबर होते है। भारत उष्णकटिबन्धीय देश है और कर्क रेखा पर स्थित है। कर्क से मकर की ओर (भूमध्य रेखा से होते हुए) सूर्य का जाना दक्षिणायन कहलाता है, मकर से कर्क की ओर जाना उत्तरायण।

इस दृष्टि से भारतीयों के लिए कर्क संक्रान्ति सूर्य के दक्षिण की ओर गमन की शुरूआत है, मकर संक्रान्ति सूर्य के हमारी ओर आगमन की शुरुआत है। अतः मकर संक्रान्ति सूर्य की अगवानी का पर्व हुआ। तभी तो यह अवधारणा पनपी कि कर्क संक्रान्ति के समय सूर्य का रथ दक्षिण की ओर मुड़ जाता है, सूर्य का मुख दक्षिण की ओर तथा पीठ हमारी ओर हो जाती है। ऐसी स्थिति को 'देवताओं का सो जाना' कह कर मंगल कार्यों के लिए निषिद्ध किया गया है। तभी आषाढ़ में आनेवाली कर्क संक्रान्ति से लेकर चार माह तक देव सोये रहते है, विवाह आदि कार्य नहीं होते। मकर संक्रान्ति के दिन से सूर्य का मुख हमारी ओर हो जाता है, सूर्य का रथ उत्तराभिमुख होकर हमारी ओर आने लगता है। इससे बड़ा हर्ष और उत्सव का अवसर भला और कौनसा हो सकता है।

यह हुआ सरल भाषा में मकर संक्रान्ति का प्रमुख महत्व। इसी कारण यह सूर्य की उपासना से सीधा जुड़ा एक मात्र उत्सव कहा जा सकता है। यह तथ्य हमारे प्राचीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण की परिशुद्धता का एक अन्य प्रमाण है कि सूर्य के क्रान्तिवृत्त की प्राचीनतम भारतीय माप में और आज की अक्षांशीय माप में कोई अन्तर नहीं है। राशियों के विभाजन में कोई अन्तर हो भी तो वह नगण्य है। आज का वैज्ञानिक भी भूमध्य रेखा के 23.27 अक्षांश उत्तर में कर्क रेखा और 23.27 अक्षांश दक्षिण में मकर रेखा मानता है। मध्यप्रदेश, बंगाल आदि कर्क रेखा पर आते है, मकर रेखा हिन्द महासागर से गुजरती है। आस्ट्रेलिया मकर रेखा पर है जहाँ मकर संक्रान्ति के समय सूर्य सिर पर तपता है, भयंकर गर्मी रहती है। प्राचीन भारत की गणनाओं के हिसाब से तो मकर संक्रान्ति से ही दिन बडे होने लगते थे, उस तिथि को सबसे छोटा दिन और सबसे बड़ी रात मानी जाती थी। अब तो दो ढ़ाई वर्षों में पृथ्वी के अक्षविचलन की गति के कारण लगभग 23 दिन का अन्तर पड़ गया है। इसे अयनांश भी कहते हैं।

आज का ग्रेगोरियन कलैंडर (याने जनवरी से दिसंबर वाला वर्तमान कलैंडर) जिससे हम अपनी डायरियाँ और दफ्तर चलाते है, सूर्य की गति के आधार पर ही बना हुआ (सौर पंचांग) है अतः प्रति वर्ष मकर संक्रान्ति के दिन 14 जनवरी की तारीख होती है और कर्क संक्रान्ति के दिन 15 या 16 जुलाई। दक्षिणायन के दिन 21 जून होता है जो साल का सबसे बड़ा दिन होता है और उत्तरायण के दिन 21 दिसंबर जो होता है जो साल का सबसे छोटा दिन होता है। इसके 23 दिन बाद मकर संक्रान्ति आती है। खैर, छोड़िए खगोल विज्ञान की इन उलझी हई गणनाओं को जिनके आधार पर हमारा ज्योतिष विश्व का प्रथम विज्ञान कहा जाता था और जिसके कारण हमें जगदगुरु कहा जातामा समय के सौर उपासना महोत्सवो का प्रतीक मकर संक्रान्ति उत्सव साजी की महत्व का पर्व इसीलिए माना जाता है। अब तो हमारा पंचांग मोबास न का पचाग याने ल्यूनी-सोलर कलैंडर हो गया है अतः मकर संक्रान्ति पौष जैसे किसी भी मास की कोई भी तिथि हो

सकती है।

मकर संक्रान्ति उत्तरायण के प्रारम्भ का अर्थात् उग्र शीत ऋतु का उत्सव है। अतः इस दिन ऋतुचर्या की दृष्टि से शीत ऋतु के अनुकूल वस्तुओं के सेवन और दान का विधान किया गया है। तिल के लड्डुओं का दान, तैल से अभ्यंग (मालिश), ऊनी वस्त्रों का दान इस दिन के धार्मिक कृत्य माने जाते हैं। साल भर का प्रमुख उत्सव होने के कारण प्रत्येक संक्रान्ति के लिए एक वस्तु का दान करने की दृष्टि से इस दिन तेरह पदार्थों का एक साथ दान किया जाता है (बारह मास और एक अधिक मास को जोड़ कर)। दक्षिण भारत ऐयप्पन का पूजक होने के नाते सूर्य का आराधक है। वहाँ पोंगल उत्सव के रूप में इस दिन खिचड़ी का सेवन, दान आदि धार्मिक विधान के रूप में घर घर में होते देखे जा सकते है। पोंगल का शब्दार्थ ही है %उफान%। इस दिन खीर या खिचड़ी पकाई जाती है और उसके उफान को समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। यह अन्न सूर्य को प्रिय है, शीत ऋतु में हितकर है। सारे देश में सूर्य को अर्घ्य दोनो मकर संक्रान्ति का प्रमुख कृत्य है।

इस दिन त्रिवेणी संगम का और गंगा-सागर संगम का स्नान पुण्यदायक माना जाता है। यह सूर्य के अर्थात् गर्म दिनों के (अग्नि तत्व के) आगमन का प्रतीक पर्व है अतः शीत की समाप्ति और वसन्त की प्रतीक्षा की खुशियाँ इसी दिन से मनाई जाने लगती है। जयपुर में यह दिन पतंग उड़ाने के लिए अपनी अलग पहचान बना चुका है। जयपुर राज्य के अधिकृत प्रतीक चिन्हों में 'यतो धर्मस्ततो जयः' शब्द और जयपुर राजाओं के सूर्यवंशी होने के कारण लोगों के मध्य में सूर्य अंकित है। इसलिए यहाँ मकर संक्रान्ति से लेकर माघ शुक्ल सप्तमी तक (जिसे सूर्य सप्तमी कहा जाता है) सूर्य की पूजा के उत्सव ही मनाये जाते हैं। युग बदलने के साथ अब तो उत्सवों का स्वरूप भी बदल रहा है। वह युग विस्मृत-सा हो चला है जब यह देश कोणार्क जैसे विशाल सूर्य मन्दिरों पर गर्व करता था। राजस्थान में भी झालरापाटन (जिला झालावाड़) के एक विशाल सूर्य मन्दिर का खंडहर प्राचीन गरिमा के भूले इतिहास को छिपाये बैठा है। मकर संक्रान्ति जैसे पर्व उसी इतिहास के अमर साक्षी हैं।

श्री दादू अनुभव वाणी

प्रस्तोता
डॉ. दयाराम स्वामी

जलती बलती आतमा,
साधु सरोवर जाय।
दादू पीवै राम रस,
सुख में रहै समाय।।

दुख दरिया संसार है,
सुख का सागर राम।
सुख सागर चलि जाइये,
दादू तजि बेकाम।।

राम नाम निज औषधी,
काटे कोटि विकार।
विषम व्याधि तैं ऊबरै,
काया कंचन सार।।